अंतरा-शब्दशक्ति

वक्त वक्त की बात

लघुकथा संग्रह

जयति जैन ''नूतन''

वक्त वक्त की बात

(लघुकथा संग्रह)

जयति जैन 'नूतन'

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN - 978-93-88102-22-3

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय नेहरु १५ :चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट ४८१३३१ (प्र.म)

शाखा२०७-एस :, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर ४५२००१ (.प्र.म)

दूरभाष९४२४७६५२५९ मो २५३१५९-०७६३३ (कार्या) :

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ ©जयति जैन 'नूतन'

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

WAQT WAQT KI BAAT by JAYTI JAIN 'NUTAN'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

“जिस विधा के कच्चे खिलाड़ी समझे थे खुद को
मौका मिला तो निशाना साध लिया ... "

इस संग्रह को मैं "नूतन लघुकथाएँ" कहना चाहूंगी क्योंकि यह एक युवा सोच का नतीजा है , इसमें मैने नयापन लाने की भरपूर कोशिश की है। अधिकतर मेरी रचनाएं महिला केंद्रित होती हैं लेकिन इस संग्रह में पुरुष भावनाओं को भरपूर स्थान दिया गया है , साथ ही मध्यम वर्ग के लोगों की भावनाओं को सामाजिक ढांचे में ढालने की कोशिश की है ताकि पाठक स्वयं को जुड़ा हुआ महसूस करें ।

आपको इसमें सास बहू और रोने धोने जैसी चीजें नहीं मिलेगी बल्कि आप कम शब्दों में पढ़ेगें और बहुत ज्यादा समझेंगें ।

इसमें मैनें रिश्तों का मान सम्मान कायम रखा है , गलती करने वालों को क्या क्या खोना पड़ता है ? कम शब्दों में बताने की भरपूर कोशिश की है।

आप भी इस संग्रह को पढ़कर मेरी ही तरह अचंभित होगें , क्योंकि लघुकथा विधा मेरे लिए नयी है । आपके मनपटल तक पहुंचे तो सूचित करियेगा ।

उम्मीद है आप जुड़ा हुआ पाएंगे स्वयं को ।

जयति जैन "नूतन"
युवा लेखिका, सामाजिक चिंतक

अनुक्रमणिका

1. शर्मिंदा	5
2. पतिधर्म	6
3. नयी राह	7
4. अपाहिज़	8
5. फरेबी औरत	9
6. कांच	10
7. पुत्रमोह	11
8. लालची	12
9. समझदारी	13
10.उम्रभर साथ	14
11.सतरंगी चुनरी	15
12.उदासी	16

शर्मिंदा

अलका मैम रुकिये, थोडा सुनिये... मैम प्लीज

पीछे से मोहन साहब दौडते चले आ रहे थे ! अलका जी पीछे मुड़कर एक बार देख चुकी थीं, फ़िर भी तेज़ कदमो से उस आदमी से पीछा छुडाना चाहती थीं, जो उन्हीं की ओर बढ रहा था !

शोपिंग प्लाज़ा से बाहर आते ही वह गाडी में बैठने को हुई, वेसे ही मोहन साहब उनकी गाडी का दरवाज़ा पकड़कर खडे हो गये और उनके हाथ में अलका जी की लिखी किताब थी !

मैम ओटोग्राफ प्लीज !

अलका जी बडे अचम्भे में थीं, क्युकिं ये वही प्रकाशक था जिसने 1 साल पहले अलका जी की नारी प्रधान पुस्तक को बेकार- रद्दी कहकर छापने से मना कर दिया था और आज वही उनके ओटोग्राफ के लिये उनका पीछा कर रहा था ! अचम्भे में उन्होने उस किताब पर अपने हस्ताक्षर किये और मोहन साहब के साथ एक फोटो भी खिचा ली !

मोहन साहब ने बडी शर्मिन्दगी से माफ़ी मान्गी और कहा - मैं बहुत ही शर्मिंदा हुं अलका जी, काश बिना पढे में इस उपन्यास को बेकार ना कहता तो आज मेरा भी नाम उंचा हो गया होता ! एक हफ़्ते पहले ही मुझे पता लगा कि आपको सर्वश्रेष्ठ लेखिका का सम्मान मिला तब मैने इस उपन्यास को खरीदा और पढा, तब मुझे अपनी गलती का अहसास हुआ ! ये तस्वीर में सभी को दिखाऊगां की मैं मिला था देश की सर्वश्रेष्ठ लेखिका से !

'जैसी आपकी मरज़ी आदरणीय' कहकर अलका जी अपनी गाडी में बैठकर अपने गन्तव्य की ओर चल दी !

पतिधर्म

कल सुबह ही रामकुमार को दूसरे शहर निकलना था मजदूरी के लिए, गांव में खुदाई के काम में इतना भी नहीं मिलता था कि वह कुछ बचा सके ।

रमिया ने बहुत गुजारिश की कि उसे भी साथ लेते चलो , काम में हाथ बटा देगी, चार पैसे भी साथ कमा लेगी । लेकिन हर बार उसे घरबार संभालने के लिए रुकने बोला गया ।

अगली सुबह जब रामकुमार दूसरे शहर जाने को घर से बाहर निकला तो देवर ने रमिया का हाथ पकड़कर उसे अपनी ओर खींचा । अचानक से रामकुमार का गमछा उठाने दालान में आना हुआ , उसने अपने भाई की इस हरकत और इरादे को भांप लिया ।अपने कमरे में गया और एक और पोटली बांध लाया ।

"चलो चलते हैं रमिया , तुम चलोगी ना साथ मेरे , तुम्हारे बिना मेरे खाने पीने का ध्यान कौन रखेगा , दोनों कमाएंगे तो छुटकी की शादी अच्छे से कर पाएंगे ।"

रमिया पैरों में गिर गयी , रामकुमार ने उसे उठाया और मां - बाबूजी से विदाई ली और वह अपने गंतव्य की ओर रमिया को लेकर चल दिया ।

नयी राह

नैना आज बहुत गुस्से में थी , हाथ में लिया आधा गिलास पानी भी उसके गले से नीचे नहीं उतर रहा था और हर बार की तरह वज्ह थे वह घटिया लोग जो अपने आप को नैना का दोस्त समझते थे ! लेकिन नैना ने उन्हें ना कभी दोस्त माना और ना कभी उन्हें अहसास होने दिया कि वह भरम में हैं !

नैना खुले विचारों की और सभी को अच्छा समझती ही थी और सच के रास्ते पर आगे बढना चाहती थी लेकिन लोगों की दकियानूसी सोच से कभी कभी वह बहुत आहत हो जाती थी, उस दिन भी यही हुआ था !

जब उसके एक दोस्त ने उसे निचा दिखाने की कोशिश की थी ! मुंह तोड जबाब दिया उसने लेकिन फ़िर खुद से महसूस किया, सोचा कि कब तक वह लोगों की बातों को सुनेगी, कब तक उसे फर्क पडता रहेगा उनकी घटिया सोच का !

उसने बेफिकर होकर आगे बढने का सोचा और पांचों उंगलियों को मिलाकर एक हौसले की मुठ्ठी बांधी !

फलस्वरूप खून की छोटी छोटी बूंदे जमीन पर बिखर चुकी थीं ! दुख- दर्द नहीं था अब, सुकून की गहरी सांस ली और उसी मंज़िल की एक नयी राह पर नयी सोच के साथ निकल पडी !

अपाहिज

शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ होना ही अपाहिज नहीं होता, संपूर्ण होने के बाद जब स्वाभिमान खत्म हो जाता है, तब असल में अपाहिज होता है इंसान !

निशा भी अपाहिज हो चुकी थी , ऐसे लोगो के बीच थी जहा उसका स्वाभिमान दो कौडी का नहीं बचा था ! हज़ार बातें सुनने के बाद भी निशा घर नहीं छोड़ पा रही थी , क्युकिं खुद के पैरों पर कुल्हाडी उसने खुद मारी थी नौकरी छोड़कर !

उसके सपनों का त्याग उसे जीने नहीं देना चाहता था , कोई कदर करने वाला नहीं था इसलिये निशा ने एक रोज़ अपने टूटे स्वाभिमान के साथ खुद को खत्म कर लिया ! किसी को भनक तक नहीं लगी , जब नौकरानी की जरुरत हुई घर में तब अहसास हुआ कि कितने काम की थी वो निशा, जो टूटे कांच की तरह चुभती रही सभी को !

अब लोग उसकी तस्वीर के आगे आंसू बहाकर दुख जता रहे थे और वह मुस्कुरा रही थी , अपाहिज न होने के अहसास ने उसका स्वाभिमान लौटा दिया था, मरकर !

फरेबी औरत

नए शहर में हर शख्स एक ऐसे शख्स की तलाश करता है , जो उसे उस शहर की आबो-हवा से रूबरू करा दे । शीना भी ऐसे ही एक महिला मित्र की तलाश में थी जो उसे नए शहर की जानकारी खुलकर दे सके ।

आखिरकार ऑफिस में उसे एक ४२ साल की महिला मिली , शीना ने जिस सॉफ्टवेयर की ट्रेनिंग ली थी , वह भी उसी पर काम कर रही थी । नई तकनीकों की जानकारी जाहिर सी बात है शीना के पास ही थी , जिसे वह औरत जानती थी ।

शीना ने कुछ दिन उससे दोस्ती करने की कोशिश की फिर एक दिन उस शहर के बारे में पूछा तो सालों से उस शहर में रहने वाली औरत ने कहा वह कुछ नहीं जानती इस शहर में ।

शीना को अजीब लगा लेकिन जल्द ही उसे ऑफिस में एक महिला साथी मिल गयी हमउम्र । दोनों ने एक रोज़ नए शहर और नए लोगों को जानने के लिए घूमने का प्लान बनाया और एक पार्क के रास्ते में वह ४२ साल की औरत मिल गयी ।

सहसा ही शीना के मुख से निकला- फरेबी औरत और वह महिला सुनकर चुपचाप निकल गयी ।

कांच

रुकमणि जी आज बडे गुस्से में थीं, अभय बाबूजी की तो हिम्मत ही नहीं हो रही थी पास जाने की ! ये गुस्सा भी तो उन्हीं का दिलाया था, बात बात पर अपनी रुक्कू को चिडाना उन्हें जो भाता था फ़िर क्या चिड गयी उनकी रुक्कू और पडोसियों तक को घर पर बर्तन फेकने की खबर मिल गयी, गुस्से में रुकमणि जी हमेशा घर के बर्तन का ही सहारा लेती थीं, वही फेंकती थी ! अभय बाबूजी के घर के ज्यादातर बर्तन टेडे-मेडे थे !

"रुक्कू देखो वो गिलास नहीं फेका अभी तक तुमने, बेचारा इंतजार कर रहा है " अभय बाबूजी का बोलना हुआ और वह गिलास ज़मीन पर, फ़िर नजर आया फ्रिज़ पर रखा फोटोफ्रेम जिसे 1 दिन पहले ही अभय बाबूजी लेकर आये थे, साथ ही 4-5 और भी लाये कि उनकी रुक्कू पसंद करले कौन सा उसे चाहिये पर किस्मत से एक ही फ्रिज़ पर रखा था फोटो से सज़ा !

रुकमणि जी ने उठाया और जमीन पर कुछ ही सेकेन्ड में एक कांच छोटे छोटे टुकडो में तब्दील !

अपनी शादी की फोटो ज़मीन पर देख वह खुश तो नहीं हुई लेकिन गुस्सा जरुर कम हो गया !

दूसरा वह उठा पाती इससे पहले ही अभय बाबूजी ने उनको दिया कि लो तोड़ दो मेरी जान, सारे तोड़ दो ! दुकान वाले को बोल देगे रास्ते में गिरकर टूट गये !

रुकमणि जी की आंखों में आन्सू थे, जो कांच के टूट जाने से नहीं बल्कि ज़मीन पर पडी उस फोटो से थे, जिसको अभय बाबूजी कांच के टुकडो के बीच से उठा रहे थे !

पुत्रमोह

पुत्रमोह ही तो था कि बेटे की लालच में किशोरीलाल ने दुबारा शादी करने का फैसला लिया था । उसकी बीवी को पिछले महीने फिर से बेटी हुई, अब किशोरीलाल की चार लड़कियां हो गयी थी । बेटे की लालच में वो अब चार लड़कियों का पिता था लेकिन सिर्फ नाम का, क्योंकि पुत्रमोह में कभी पुत्रीप्रेम नहीं उपज सकता है ।

उसने अपनी बीवी और चारों लड़कियों को घर से बेघर कर दिया, गरीबी का आलम था तो ना ही पुलिस में रपट लिखी ना ही पंचायत जुटी। बेटियों को लेकर लाली अपने मायके आ गयी, कुछ दिनों में उसने झाड़ू पौछा कपड़े का काम दूसरों के यहाँ शुरू कर दिया। बड़ी बेटी भी मां की तरह एक दर्ज़ी के यहाँ काम करने लगी । इतना कमा लेती थी दोनों की भूखा ना सोना पड़े ।

उधर किशोरीलाल को एक बेघर औरत मिल गयी और उसने अपनी पहली शादी की बात छुपाकर दूसरी शादी कर ली । बेटे की चाह में उसने अपनी बीवी को रानी की तरह रखा, साल भर भी नहीं हुआ कि किशोरीलाल पांचवीं लड़की का बाप बन गया । इस बात पर उसने अपनी बीवी को बहुत पीटा तो उसकी बीवी घर में रखी नगदी और बच्ची को लेकर भाग गयी ।

शाम को घर लौटकर उसने खूब छानाबीनी की ना तो बीवी मिली ना ही पैसे । पुत्रमोह ने उसे ठग लिया था ।

लालची

अनुप्रिया मर रही थी या यूं कहो सालों पहले मार दी गयी थी ।

मां बाप ने अपनी एकलौती बेटी की शादी बहुत अच्छे तरीके से की थी, इस उम्मीद में कि बेटी सुखी रहेगी। लेकिन पैसों के लालची ससुराल वालों ने ताने मार मार कर अनुप्रिया को अधमरा कर दिया था । शादी के अठारह सालों में मायके वालों को खबर ही नहीं लगी कि उनकी बेटी को कोई परेशानी भी है, अपने माँ बाप को अपनी स्थिति बताकर वह तकलीफ नहीं देना चाहती थी, इसलिए चुपचाप सहती रही ।

पति के अंदर अपने बाप के सारे गुण आये, ज्यादा से ज्यादा पैसे कमाने की ओर उसने ध्यान दिया । कभी दो पल भी अनुप्रिया से प्यार से ना कभी बात की ना ही उसे समझने की कोशिश । धीरे धीरे उसे कई बीमारियों ने घेर लिया, चार साल पहले की ही तो बात थी जब सास का धक्का लगा और अनुप्रिया सीढ़ियों से नीचे, तभी से अनुप्रिया रीढ़ की हड्डी से परेशान थी लेकिन काम सारा करना पड़ता था, पति को ना ही तब मतलब था ना ही आज ।

उसका इलाज यानी पैसों की बर्बादी, रोज़ रात बिस्तर पर अपनी जरूरत पूरी की और सुबह कोई मतलब नहीं चाहे दर्द के मारे तुम तड़पती क्यों न रहो और अनुप्रिया आज वेंटिलेटर पर थी और उसका पति पैसे कमाने के लिए अपने काम पर ।

समझदारी

पसीने से लथपथ छोटू दौड़ता हुआ घर पहुचां, आज उसे खीर जो मिलने वाली थी । महज़ दस बरस का छत्रपाल, जिसे वर्मा साहब के यहाँ सभी छोटू बुलाते थे । नाम भले छोटू पड़ गया था लेकिन घर की जिम्मेदारी ने उसे समझदार बना दिया था पर अब भी कहीं ना कहीं अपनी पसंद की चीजें देखकर दस बरस का मन लालायित हो उठता था ।

माँ दो बरस पहले छोड़के जा चुकी थी, कहां दोनों बच्चों को पता नहीं था । बस पता था तो इतना कि बाप ने एक दिन शराब पीकर बहुत पीटा था उसे, आधी रात को मां बड़ी बहिन रूपलेखा को कुछ बोलकर चली गयी थी । बाप जो कमाता शराब पीकर खत्म कर देता, दीदी काम करती है तो उसे पीटता है बचा छोटू जिसे पांच सौ रूपये मिलते थे महीने के ।

एक दिन वर्मा साहब के यहाँ खाना बनाने वाली नॉकरी छोड़ गई, नयी नॉकरानी की तलाश में उन्होंने छोटू को बोला तो उसने झट से रूपलेखा का नाम बताया लेकिन शर्त रख दी कि एक कमरा घर का देना होगा ताकि वो दोनों वही रह सकें फिर भले वो कम रुपये क्यों ना दें।

सब तय हो गया घर का स्टोर वाला एक छोटा कमरा और आठ सौ रुपये दोनों के मिलाकर एक महीने के मिलेगें । दोनों ने खुशी खुशी बाप के काम पर जाते ही घर छोड़ दिया ।

उम्रभर साथ

सुबह-सुबह कार दुर्घटना की खबर चौधरी खानदान में ऐसे फैली जैसे समुद्र में तूफान आया हो । होता भी क्यों नहीं खानदान का सबसे बड़ा बेटा आज अस्पताल में था, जिसकी शादी को महज एक हफ्ता ही बचा था । पेट्रोल पंप का ठेकेदार, माँ बाप का इकलौता लड़का मोन्टी दोस्तों के साथ बेचलर पार्टी करके लौट रहा था और दुर्घटना में अब अपनी एक टांग खो चुका था ।

बात आनन-फानन में ससुराल वालों तक पहुंची लड़की के भाई पिता आये देखने और सांत्वना देकर लौट गए । घर जाकर उन्होनें इस रिश्ते को तोड़ने की बात कही, पल्लवी फूट फूट कर रोई जा रही थी । उसने अपनी माँ और चाची को रिश्ता तोड़ने से मना किया लेकिन कोई भी मां बाप अपाहिज़ के साथ अपनी बेटी नहीं ब्याह देता ।

खबर मोन्टी के घरवालों तक पहुंची, वह भी तैयार हो गए कि मोन्टी का रिश्ता तोड़ने को । कुछ दिनों बाद दोनों परिवार एक साथ जुटे, पंचों को भी साथ बैठाया ।

मोन्टी और पल्लवी को भी अपनी राय देने को कहा, दोनों ने एक दूजे के साथ रहने में अपनी हामी भरी । परिवार वाले पंचों की कही बात को ठुकरा नहीं सके और तय तारीख पर दोनों का शुभमंगल विवाह कराया ।

सतरंगी चुनरी

एक लंबे बाल वाली लड़की जिसके बाल कमर तक मोटे घने लंबे थे और हमेशा सतरंगी चुनरी ओढे अक्सर लाइब्रैरी जाते दिखती थी, सामने से उसे दिलीप ने नहीं देखा था कभी । हमेशा अपने दोस्तों से कहता कि ये बेचारी लड़की इसके पास चुनरी ही नहीं है कोई दूसरी ।

एक दिन में अनाथ आश्रम के बच्चों के लिये कपडे लेने गया तो सुर्ख लाल रंग की चुनरी दिखी तो दिलीप ने ले ली कि उस लड़की को दे दूंगा।

अगले ही दिन जैसे ही फ़िर वो लड़की दिखी दिलीप भाग कर पहुचा उसके पास, वो सादगी से लबालब, सुंदर लड़की थी जिसे कोई लडका मना नहीं कर सकता था और वो दिलीप आंखे फाड़ फाड़ कर देख रही थी।

जरा देर में बोली शायर साहब आप, ऐसे अचानक... उससे जायदा अचम्भे में दिलीप था कि ये मुझे जानती है । बोली- कालेज के एक समारोह में मैंने आपकी शायरी गज़ल सुनी थी ।

दिलीप ने उसे बताया उस चुनरी के बारे में बताया तो वह बहुत हंसी, बोली सतरंगी चुनरी देखने में एक लग सकती हैं लेकिन ऐसी मेरे पास ढेरो हैं कुछ में सीधी लाइन है, कुछ मै तिरछी, कुछ में खडी !

दिलीप ने उससे माफ़ी मान्गी, और निवेदन किया कि वो ले ले उसे, नयी दोस्ती की नयी शुरूआत की खातिर ।

कंचन ने भी चुनरी लेकर दोस्ती स्वीकार की ।

उदासी

बेटी की शादी के लिए जी- तोड़ मेहनत करके एक एक पाई जोड़ी थी रमेश ने । उसे क्या पता था कि ना आज की दुनिया में बेटी का मोल है, ना ही उसकी मेहनत का ।

पिछले महीने की ही तो बात थी जब लड़के वाले आये और रिश्ता तय कर गए, आखिर बेटी है भी तो सर्वगुण सम्पन्न खूबसूरत । फिर भी कुछ दिन में रिश्ता टूट गया क्योंकि दहेज़ की रकम जो पांच लाख थी, मंहगाई के जमाने में कैसे कोई तीन बच्चों को पढाये और घर खर्च चलाये ।

बेटी ने पैसों की मांग सुनकर शादी तोड़ने का फैसला सही कहा लेकिन एक बाप की नजर से यह वो बदनामी थी जो अंदर घोंट रही थी ।

रमेश और पैसे कमाने के लिए नई नई तरकीबें सोचने में लगा रहता था, लेकिन उदासी जो मन में घर कर गयी थी, मिटनी नामुमकिन सी थी ।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - जयति जैन 'नूतन'

जन्म - 01.01.1992 (रानीपुर, जिला झांसी , उ.प्र.)

पति - इं. मोहित जैन

शिक्षा - डी फार्मा, बी.फार्मा, एम. फार्मा

निवास - जयति जैन 'नूतन', 441, सेक्टर-3

ई मेल पंचवटी मार्केट के पास, शक्तिनगर भोपाल - 462024

विधा - गद्य लेखन, लेख, कहानी, कविता, दोहे, मुक्तक आदि

कार्यक्षेत्र - रजि. फार्मासिस्ट, हिन्दी सागर पत्रिका में अतिथि संपादक के रुप में कार्यरत्।

प्रकाशन - 180 लेख, 350 से ज्यादा रचनाएं क्षेत्रिय, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हो चुकी हैं। समाचार पत्र, पत्रिकाओं एवं ई पत्रिकाओं में प्रकाशन उपलब्ध। गुगल पर जयति की कहानी लगभग 12 लाख से ज्यादा लोगों ने पढ़ी हैं। सांझा काव्य संग्रह मधुकलश, अनुबंध, प्यारी बेटियाँ, किताब मंच, भारत के युवा कवि और कवियित्रियाँ एवं अंतरा शब्द शक्ति आदि में प्रकाशित।

सम्मान - श्रेष्ठ नवोदित रचनाकार सम्मान, अंतरा शब्द शक्ति सम्मान, श्रेष्ठ युवा रचनाकार सम्मान हिन्दी सागर सम्मान, कागज़ दिल साहित्य सेवी संस्था की ओर से पटल पर संदेशात्मक लेख हेतु कागज़ दिल साहित्य सुमन सम्मान व शगुन राशि भेंट।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-22-3

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com